स्थानीय कलीसिया में विश्वव्यापी प्रार्थना

1 तीमुथियुस 2:1–7

अच्छा, यदि आपके पास बाइबल है, और मैं आशा करता हूँ कि होगी, तो आप मेरे साथ 1 तीमुथियुस 2 निकालें। जबकि आप इसे निकाल रहे हैं, मैं आप सभी का धन्यवाद करना चाहूँगा कि बीते सप्ताह आपने अपनी प्रार्थनाओं में मुझे, मेरी पत्नी, और मेरे परिवार को याद रखा। यह बहुत ही लंबा सप्ताह था। कई सालों से मेरी सासु माँ अपनी सेहत से जुड़ी समस्याओं से जूझ रहीं थीं, और कुछ सप्ताह अस्पताल में भी रहीं थीं। बस कुछ सप्ताह पहले उन्हें गुर्दों के खराब होने के कारण अस्पताल जाना पड़ा था, और वे वहाँ पर कुछ सप्ताह तक दाखिल रहीं, लेकिन पिछले सप्ताह उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई, और उनकी सेहत में कुछ–कुछ सुधार दिखने लगा था। वह डायलिसिस पर थीं। कुछ दिनों के लिए मेरी पत्नी और बेटे जाकर, उनके घर पर, उनके साथ ही रह रहे थे कि शुक्रवार की सुबह मेरी पत्नी ने मुझे फोन पर बताया कि सासु माँ को अस्पताल ले जाया जा रहा है। उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ उन्हें पता चला कि उनके दिमाग में भारी मात्रा में रक्तस्राव हुआ था, और शुक्रवार की रात होते–होते हालात बहुत बदतर हो गए। फिर, शनिवार की सुबह सासु माँ का देहान्त हो गया। कई तरह से, यह सप्ताह हमारे लिए बहुत लंबा था।

अपने पिछले सप्ताह के अनुभवों से मैंने तीन छोटी बातें सीखी हैं, जो मेरे विचार से, 1 तीमुथियुस 2 की ओर हमारी अगुवाई करेंगी। पहली बात, मैं मसीह की देह का बहुत आभारी हूँ। जानते हैं, दुख और मुसीबत के समय विश्वास के परिवार का होना बहुत मायने रखता है। मैं विशेष रुप से मसीह की इस देह का बहुत आभारी हूँ, और जिस तरह से आप लोगों ने हमारे लिए प्रार्थना की और तरह–तरह से हमारी सहायता की, उसके लिए मैं और मेरी पत्नी, हम दोनो ही आप सबके बहुत आभारी हैं। आपमें से कुछ लोग, पिछले मंगलवार की रात को अंतिम संस्कार गृह में मिलने आए थे। कलीसिया के कुछ लोग बुधवार को अंतिम संस्कार के समय मौजूद थे। अंतिम संस्कार के समय प्रचार करते समय, जो कि बहुत कठिन काम होता है, मुझे यह देख कर बहुत राहत मिली कि वहाँ पर मेरे वे भाई–बहन थे, जो मेरे लिए प्रार्थना कर रहे थे, और अंतिम संस्कार के समय लोगों के मसीह में आने की प्रार्थना कर रहे थे। मेरे लिए यह बहुत ही प्रोत्साहन भरा अनुभव था, इसलिए विश्वास का ऐसा परिवार होने के लिए मैं आप सबका धन्यवाद देना चाहता हूँ। तो, यह थी वह पहली बात। मैं मसीह की देह का बहुत–बहुत आभारी हूँ।

दूसरी बातः मैं मसीह से मिलनेवाले उद्धार का आभारी हूँ। मृत्यु एक सच्चाई है, और स्वर्ग व नरक भी। मैं यह सोंच कर काँप जाता हूँ कि यदि यह घटना कुछ सालों पहले हुई होती तो बीते सप्ताह का यह अनुभव किस प्रकार का होता। आपमें से कुछ लोग यह बात जानते हैं कि मेरी सासु माँ बस एक साल

पहले ही मसीह में आई थीं, बस कुछ महीनों पहले उनका बपतिस्मा हुआ था। मैं एक रविवार यहाँ मौजूद नहीं था, क्योंकि मैं उन्हें बपतिस्मा देने के लिए उनके शहर गया हुआ था, और इस सच्चाई को देखना की प्रभु की दृष्टि में उसके संतों की मृत्यु बहुत अनमोल होती है, और यह जानना कि पिछले शनिवार की रात, जब मृत्यु ने अपने जबड़ें उन पर फँसाए थे, तब मसीह के जीवन ने उन्हें शक्ति दी थी, और आज वह जीवित हैं।

मेरी सासु माँ का जीवन सांस्कृतिक मसीहत पर एक पाठ्यपुस्तक थी। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप मेरी बातों पर बराबर ध्यान दें, क्योंकि मेरे विचार से आपके लिए, और संदेश को सुननेवाले कई श्रोताओं के लिए इसमें एक संदेश है। हम इस कलीसिया–संस्कृति में हैं जहाँ हम यह मानते हैं कि अगर कोई कलीसिया जाता है, और कभी किसी समय उसने मसीह पर विश्वास किया था, तो वह बचा लिया गया है। हम कहते हैं, ''ठीक है, यह बहुत अच्छी बात है। हम जानते हैं कि वे अब स्वर्ग में हैं।'' लेकिन यह सच नहीं है। इस तरह की धारणा, विशेष रुप से अंतिम संस्कार के समय और भी खतरनाक हो जाती है। यह सच नहीं है। बाइबल कभी ऐसा नहीं कहती कि अगर आप कलीसिया में नियमित रुप से जाते हैं तो मरने पर आपको स्वर्ग मिलेगा। बाइबल कभी ऐसा नहीं कहती कि अगर आपके पास मसीह का बौद्धिक ज्ञान है, तो मरने पर आपको स्वर्ग मिलेगा। बाइबल तो कहती है कि शैतान भी परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं। लेकिन वे स्वर्ग नहीं जाते।

सच्चाई तो यह है कि कुछ सालों पहले, पूछने पर मेरी सासु माँ ने भी कहा होता कि वे एक मसीही हैं। उनका मसीह पर बौद्धिक रुप से विश्वास था और वे कलीसिया जाती थीं, लेकिन एक साल से कुछ ज़्यादा अरसा पहले, वह बुद्धि से मन में उतर आया था। परमेश्वर ने उनके मन, जीवन और इच्छाओं को बदल दिया, उनकी आत्मा को जगाया, और तब उन्होंने यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता के रुप में जाना, और वह विश्वास सभी जगह बहने लगा। यीशु मसीह पर सच्चे प्रेम और उसके बौद्धिक विश्वास के बीच एक असीम अन्तर होता है, हम कलीसिया संस्कृति में जीते हैं जो लगभग हमें मसीह का थोड़ा बहुत अंगीकार, मसीह को बौद्धिक रुप से मानने, और कलीसिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का प्रोत्साहन देती है, और बाइबल नहीं कहती कि इनमें से कोई भी चीज़ हमें बचाती है। हमे जो चीज़ बचाती है वह है मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मान कर उस पर भरोसा करना और जीवन भर उसके पीछे चलना।

इसलिए, मैं इस संदेश को सुन रहे हर व्यक्ति से यह प्रश्न पूछता हूँ। सांस्कृतिक मसीहत के भुलावे से बाहर निकल आएँ। क्या आपका मन मसीह के पास है? क्या मसीह आपका जीवन है? जब ऐसा समय आता है, कि आप किसी अस्पताल में हों और आपकी सेहत गिरती जा रही हो, तो उस दिन, यह बात मायने नहीं रखेगी कि आप कलीसिया जाते थे, या कि मसीह में बौद्धिक रुप से विश्वास करते थे, या कि इस संस्कृति में एक अच्छे व्यक्ति रहे थे। तब मायने यह बात रखेगी कि क्या आपने मन और

जीवन में मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता और राजा माना है या नहीं। यही बात असल में मायने रखती है, और मेरी सासु माँ के जीवन की गवाही से, विशेष रुप से पिछले एक साल की गवाही से यही बात पता चलती है कि मसीह हमारे बौद्धिक विश्वास और थोड़े बहुत अंगीकार से कहीं अधिक के योग्य है। वह इस योग्य है कि आप उसे अपना मन और जीवन सौंपें, और सुख–दुख के समय आप उस पर मन और जीवन से भरोसा कर सकते हैं।

यही है उनके जीवन की कहानी, कि परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। जब आपको मधुमेह हो जाए, स्तन कैंसर का पता चले, तंत्रिकाविकृति के समय आप उस पर भरोसा कर सकते हैं, और आँखों के डीजेनेरिट रोग के समय उस पर भरोसा कर सकते हैं, और आप उस पर गुर्दों के खराब होने के समय भी भरोसा कर सकते हैं, और आप दिमाग में भारी रक्तस्राव के समय भी आप उस पर भरोसा कर सकते हैं, क्योंकि इन सबके बीच, आप उसे जानते हैं। यह दिखावे का विश्वास नहीं है, बल्कि सच्चा विश्वास है। आप उसे जानते हैं, और उसकी सामर्थ्य को जानते हैं, और आप उसके अनुग्रह और उसकी शांति को जानते हैं, और आप उसके जय को जानते हैं, जब यह शरीर और बदार्श्त करने के लायक न रहे और आपका दिल काम करना बंद कर दे, और आपकी साँसें थम जाए, उस पल में, आप उसकी जय को जान जाते हैं, क्योंकि आप अपना जीवन उस व्यक्ति के साथ एक कर चुके होते हैं, जिसने मृत्यु को परास्त किया था। जब आप मौत के साये की घाटियों में चलते हैं, वह आपके साथ होता है, और आप यह जान जाते हैं कि यह बात पूरी तरह सच है कि : *''जीना मसीह, मर जाना लाभ है।''*

लेकिन, इस बात पर ज़रुर ध्यान दें कि : मरना केवल उसी सूरत में लाभ होता है जब जीना मसीह हो। तो क्या वह आपका जीवन है? कोई भी प्रश्न इससे अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं। शायद केवल यही बात सुनवाने के लिए परमेश्वर आपको मेरे इस संदेश के पास लेकर आया है। ताकि इस संदेश को सुनते समय, आपके मन अनन्तता से जुड़ी कोई बात घटे। धार्मिक कपट और सास्कृति स्वीकृति से आगे बढ़ें और अपने मन और जीवन को उस मसीह को प्रभु व उद्धारकर्ता के रुप में सौंप दें, और जीवन मसीह और मृत्यु लाभ है।

मैंने कहा सीखनेवाली छोटी–छोटी बातें कहा था। जानता हूँ कि लंबी–चौड़ी बात थी, लेकिन वह बहुत ज़रुरी थी। पहली बात, कि मैं मसीह की देह का आभारी हूँ। दूसरी बात, मैं मसीह के दिए उद्धार का बहुत आभारी हूँ, और उसके बाद, तीसरी बातः पिछले सप्ताह के अनुभव मुझे इस बात का हौसला दिया है कि मैं इस रीति से मसीह की इस देह की अगुवाई और पासबानी करुँ, और प्रेम रखूँ कि हम, एक साथ मिलकर, अपने शहर में, और धरती के छोर तक जाकर मसीह के उद्धार की घोषणा कर सकें।

मैं यह बात जानता हूँ कि आपमें से भी बहुतों को ऐसा अनुभव हो चुका है, और अपने किसी करीबी को खोया है, और यदि आप इस अनुभव से गुज़रे हैं, तो आप यह बात जानते ही हैं कि मृत्यु नज़रिये को बदल देती है। एक पल में, बहुत सी चीज़े आपके मन को, और आपके काम–काज को, और आपकी भावनाओं पर हावी हो रही होती हैं, और आप पूरी तरह से उनमें डूबे होते हैं, और आपको बहुत सी चीज़ों की चिंता हो रही होती है, और वह चिंता भी पूरी तरह आप पर हावी हो रही होती है, कि अचानक ऐसा कुछ हो जाता है, और आपको अहसास होता है, ''अरे! ये सब बातें जीवन में उतना महत्व नहीं रखतीं।'' परम महत्व की बातें भी हैं जिन पर ध्यान देना है।

हमें अपने जीवन में इस तरह नज़रिये को बदलनेवाली बातें चाहिएं। हमें याद दिलाने की ज़रुरत होती है। हम बहुत व्यस्त लोग हैं। आपके जीवन में, काम–काज की सूची और ब्यौरे में बहुत कुछ है, और आपका दिमाग और आपकी भावनाएँ इस सप्ताह इन बातों में पूरी तरह से भरे हुए हैं। लेकिन मैं हम सबको इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ, कि जबकि हम इस सप्ताह की शुरुआत कर रहे हैं, हम अपने नज़रिये में थोड़ा सा बदलाव लायें। इस बात का अहसास करें कि एक कलीसिया होने के नाते, जीवन में कौन सी बात सबसे अधिक महत्व की है, और इस बात का अहसास करें कि इस शहर में, इस ईमारत के आसपास ऐसे लोग हैं जो मरनेवाले हैं, और उनमें से कुछ मरेंगे और मसीह के बिना उस अनन्त पीड़ा को झेलने के लिए नरक में जाएँगे।

इसलिए, इस बात को समझते हुए कि आप और मैं यह जानते हैं कि मसीह मृत्यु पर जय पा चुका है, कि वह अनन्त जीवन का मार्ग बना चुका है, और इसलिए, इस बात को जानें कि वह कौन सी बात है जो इस सप्ताह हमारे लिए सबसे अधिक महत्व की है। आपके जीवनों में लिए केवल यही बात सबसे अधिक महत्व रखती है कि हम यह समाचार उन लोगों को बतायें, जो हमारे आसपास मर रहे हैं। यही बात कलीसिया के लिए भी सबसे अधिक महत्व की है। बाकी जगह को छोड़िए, कलीसिया तक में भी हम बाकी के कम महत्व के कामों में इतना व्यस्त हो सकते हैं कि हम ऐसा सोंचने लगते हैं, ''ओह, कलीसिया को हमारे आराम और पसदं–नापसंद पर अधिक ध्यान देना चाहिए।'' नहीं! कलीसिया के लिए सबसे महत्व केवल एक बात रखती है कि हम सब यहाँ एक मिशन में हैं। इस सप्ताह हमारे पास अपने शहर के लिए एक उद्देश्य है, अपनी दुनिया के लिए एक उद्देश्य है, और एक ब्रह्माण्डिय उद्देश्य है जिसमें लोगों की अनन्तता दाव लगी है।

अपने इस संदेश की तैयारी करते समय, पिछले सप्ताह मैंने एक दृष्टांत पढ़ा था। दरअसल आखरी रविवार को इसका प्रयोग करने की बात मैंने सोची नहीं थी, लेकिन मेरा ध्यान इस पर फिर से लाया गया। मैं इसे आपके लिए पढ़ देता हूँ:

''पानी के जहाज़ों को तबाह करने के लिए बदनाम और खतरनाक किसी समुद्र–तट पर एक छोटा सा, कच्चा–पक्का जीवनरक्षण स्टेशन था। असल में, वह स्टेशन एक झोपड़ें से ज़्यादा कुछ नहीं था, जिसमें केवल एक ही नाव थी। लेकिन वहाँ कुछ समर्पित सदस्य थे जो बिना अपनी जान की परवाह किए उस अशांत समुद्र की लहरो पर बराबर नज़र रखते थे। वे दिन–रात बाहर जाते, और बिना थके खतरे में पड़े हुए और खोये हुए लोगों की खोज में लगे रहते। एक दल की तरह काम में जुटे रहनेवाले, जीवनरक्षण स्टेशन के इन बहादुर सदस्यों के कारण बहुत से लोगों की जान बचाई जा सकी थीं। धीरे–धीरे, यह एक मशहूर जगह बन गया। बचाए गए लोग, और समुद्र–तट के आसपास के बाकी लोग भी इस स्टेशन से किसी न किसी तरह जुड़ना चाहते थे। इस स्टेशन के लिए वे अपना तन,मन, धन देने को तैयार थे।

नई नावें खरीदी गईं; नए सदस्य दल में प्रशिक्षित किए गए। वह स्टेशन जो किसी ज़माने में अज्ञात और कच्चा–पक्का सा और लगभग महत्वहीन था, वह अब बढ़ने लगा था। लेकिन कुछ सदस्य इस बात से नाखुश थे कि स्टेशन दिखने में बहुत भद्दा और बिना अधिक साज़ोसामान के था। उन्हें लगा कि उन्हें अधिक आरामदायक जगह मिलनी चाहिए। आपातकालीन नावों की जगह तब सुंदर फर्नीचर ने ले ली। हाथ के बने स्थूल उपकरण को फेंक दिया गया और उसकी जगह तकनीकी रुप से अधिक उत्कृष्ट और बेहतर उपकरण लाये गये। ज़ाहिर है कि झोपड़ी भी तबाह कर दी गई, ताकि नए उपकरणों के लिए जगह बनाई जा सके, जैसे किः फर्नीचर, प्रणालियाँ और नए लोग।

इसके पूरा होते होते, जीवनरक्षण स्टेशन लोगों की मन–पसंद जगह बन गया, और उसका उद्देश्य धुँधलाने लगा। अब वह एक तरह के क्लबहाउस की तरह प्रयोग में आने लगा, लोगों के जमा होने की एक आकर्षक ईमारत। लोगों के जीवन बचाना, भूखों को भोजन खिलाना, डरे हुए लोगों को हौंसला देना और अशांत लोगों को शांत करने का काम अब कभी कभार ही होता था। दल के बहुत कम सदस्य ही अब समुद्र की लहरों पर जोखिम उठा कर लोगों के जीवन को बचाने में रुचि लेते थे, इसलिए उन्होंने इस काम के लिए पेशेवर लाइफबोट दल के सदस्यों को भाड़े पर रख लिया। वैसे स्टेशन का बुनियादी उद्देश्य पूरी तरह से भुलाया नहीं गया था। क्लब की साज–सज्जा में अब भी स्टेशन के मुख्य उद्देश्य की झलक थी। असल में, एक प्रतीकात्मक लाइफबोट वहाँ के एक प्रमुख कमरे में रखी थी जिस पर हल्के प्रकाश की तिरछी किरणें पड़ती थीं, ताकि किसी समय जीवन को बचाने के लिए प्रयोग होनेवाले उस जहाज पर जमी धूल की परत उसमें छिप सके।

एक काली, तूफानी रात। तट पर एक बड़ा सा जहाज़ तबाह हो गया, और भाड़े के सदस्य ठंडे, भीगे, और लगभग डूब चुके लोगों से भरी नाव की नाव ले आए। वे गंदे और बीमार थे और दूर

किसी जगह के रहनेवाले थे। पूरे स्टेशन में अफरातफरी मची थी। यह पूरी घटना इतनी हिला देनेवाली थी कि एक नई ईमारत बनवाने का ठेका दे दिया गया, ताकि भविष्य में इस तरह की घटना को बिना अधिक परेशानी के निबटा जा सके। अगली बैठक में कड़े शब्द और गुस्से की भावना का बोलबाला था, जिसका नतीजा यह हुआ कि लोगों में फूट पड़ गई। अधिकतर सदस्य स्टेशन के जीवनरक्षण के काम को बंद करना चाहते थे, क्योंकि यह काम उन्हें नापसंद था और इससे उनकी सामान्य ज़िंदगी में अड़चन होती थी। लेकिन कुछ लोगों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और ज़ोर दिया कि जीवन को बचाना ही उनका मुख्य उद्देश्य था, और इस बात पर सबका ध्यान दिलाया कि उस जगह को अब भी जीवनरक्षण स्टेशन ही कहा जाता था। लेकिन उनकी बात की अनदेखी कर दी गई और कहा गया कि अगर वे अब भी जीवनरक्षण को अपना मुख्य उद्देश्य रखना चाहते थे, तो वे तट में आगे की तरफ अपना एक अलग स्टेशन बना सकते थे; और उन्होंने ऐसी ही किया।

कुछ सालों बाद, नए स्टेशनों में भी पुराने स्टेशन जैसे बदलाव किए गए। वह भी एक नए क्लबहाउस में बदल गया, और नतीजन एक और नया जीवनरंक्षण खोला गया। इतिहास खुद को दोहराता रहा, और अगर आज आप उस तट पर जाएँगे, तो वहाँ आपको पेशेवर लोगों द्वारा चलाई जानेवाली बढ़िया और दमदार ईमारतों की एक पूरी पंक्ति मिलेगी, जिन्हें उन पेशेवरों द्वारा चलाया जा रहा है जिनकी जीवनरक्षण के काम में कोई रुचि नहीं है।''

इसलिए, इजाज़त हो, तो भाइयों और बहनों, मैं हम सभी को यह याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारे पास भी करने के लिए एक काम है। इस सप्ताह आपके लिए क्या बात सबसे महत्व की है? इस सप्ताह की सबसे महत्वपूर्ण बात है पूरे शहर में लोगों को मृत्यु से जीवन की ओर ले जाना। हमारे लिए सबसे महत्व की बात है संसार भर में लोगों को मृत्यु से जीवन की ओर ले जाना। विरोधी लगातार इस बात का प्रयास करेगा कि वह हमारी सोंच को, और हमारी भावनाओं को, ऐसी बातों में उलझा दे जिनका हमारे जीवन में, और हमारी कलीसिया के लिए कोई महत्व नहीं है। इसलिए, मैं हम सबको प्रोत्साहित करता हूँ कि हम अपने स्तर से ऊपर उठें और उस सबसे प्रमुख उद्देश्य को देखें, और उसके लिए जीएँ, ताकि शहर भर के सभी लोग मसीह में एक धन्य मृत्यु को प्राप्त कर सकें, और सदा के लिए उसके पास जा सकें। हमें इसी के लिए अपनी साँसें लेनी हैं।

प्रारंभिक प्रोत्साहन

इस तरह, यह हमें सीधा इस वचन की ओर ले जाता है : 1 तीमु. 2 : ठीक है, दो सप्ताह पहले, हम 1 तीमुथियुस 1 में थे, और हमने पौलुस को यह कहते हुए देखा, ''ठीक है, सबसे पहले, इफिसुस की कलीसिया, तीमुथियुस, सुसमाचार की रक्षा कर। सुसमाचार का उत्सव मना। अपने जीवनों में और

कलीसिया में इसके लिए लड़।'' इस तरह, हमने सुसमाचार की बुनियाद डाली थी। इसलिए, हम इसके आगे जो देखनेवाले हैं, 1 तीमुथियुस 2 से, वे प्रोत्साहन और व्यावहारिक प्रयोग है। जबकि हम सुसमाचार की रक्षा करते हैं और अपने जीवनों और कलीसिया में सुसमाचार के लिए लड़ते हैं, ये सारी बातें हमारी जीवन शैली को किस रीति से प्रभावित करती हैं? इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप सुसमाचार की बुनियाद पर आधारित पौलुस के प्रारंभिक प्रोत्साहन को देखें। अपने सुसमाचार की बुनियाद के साथ वह कलीसिया को सबसे पहले कौन सी व्यावहारिक चीज़ करने को कहता है? 1 तीमु. 2:1 देखें :

'' अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूँ, कि (पौलुस की कही सबसे पहली बात) बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाए। राजाओं और सब ऊँचे पद वालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भांति पहिचान लें। क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए। मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक (मैं सच कहता हूँ, मैंने यह झूठ नहीं कहा) और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।''

सब मनुष्यों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो।

तो यह रही वह बात। पौलुस, तो कलीसिया में सुसमाचर की रक्षा के बुनियाद के लिए आप कौन सी व्यावहारिक प्रयोग बताना चाहोगे? सबसे पहली बात, पौलुस कहता है कि सब मनुष्यों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो। तो पौलुस तीमुथियुस से, इफिसुस की कलीसिया से, और हम सबसे जो कहता है, वह है प्रार्थना करो। ''...बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद...।'' चार शब्द, लेकिन बुनियादी तौर पर वे एक ही बात को कहते हैं। ''हम समझ गए, पौलुस। हमें प्रार्थना करनी चाहिए। हमें प्रार्थना करनी ही है।''

इसलिए, कलीसिया, आप जीवन को बचाने के मिशन में हैं, और आप इस शहर में उन लोगों से घिरे हुए हो जो मसीह को नहीं जानते। ऐसे में आप क्या करेंगे? शुरुआत कहाँ से करेंगे? आप प्रार्थना करेंगे। यह सबसे सरल काम है। आपको ऐसा करने के लिए अपने बिस्तर से उतरने की ज़रुरत नहीं है। आपको अच्छी पोशाक पहन कर कहीं जाने की ज़रुरत नहीं है। आपको लोगों से बातचीत तक करने की ज़रुरत नहीं है। बस परमेश्वर से बातचीत करें। पौलुस कहता है प्रार्थना करें। बिनती और प्रार्थना करो। क्या आप उन लोगों को प्रभावित करना चाहेंगे जिनकी नियति अनन्त नरक है? आप दुनिया भर के लोगों को, यहाँ तक कि राजा और ऊँचें पदों के अधिकारियों पर भी प्रभावित करना

चाहते है? क्या आप प्रभाव डालना चाहते हैं? तो फिर प्रार्थना करें। जो कार्य परमेश्वर लोगों के बीच कर रहा है, आप अपने जीवन को उसमें शामिल करवाना चाहते हैं? प्रार्थना करें।

अब प्रश्न है कि हम किसके लिए प्रार्थना करें? पौलुस कहता है, *''सब मनुष्यों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।'* पौलुस कहता है, *''अब मैं सब से पहिले यह उपदेश देता हूँ, कि (पौलुस की कही सबसे पहली बात) बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाए।''* अब पौलुस के कहने का यह मतलब नहीं है कि दुनिया भर के सभी व्यक्तियों के लिए नाम–बनाम प्रार्थना करो'' असल में वह हर तरह के लोगों के लिए प्रार्थना करने की बात कर रहा है। वह यह पत्री इफिसुस के मसीहियों को लिख रहा है। उनमें से कुछ यहूदी मसीही थे। बाकी अन्यजातीय मसीही, और इफिसुस की पुस्तक से हमें यह पता चलता है कि दोनो समूहों के बीच थोड़ा तनाव था। वास्तव में पौलुस लगातार इन दोनो समूहों की ओर संकेत कर रहा है। यहूदी मसीहियों और अन्यजातीय मसीहियों के लिए प्रार्थना करो।

इफिसुस में विधर्मी नॉस्टिग (रहस्यवादियों) भी थे जो इस बात का दावा करते थे कि उद्धार केवल एक चुने हुए धार्मिक रुप से कुलीन लोगों तक सीमित था। अपने पूरी पत्री में पौलुस उन्हीं की बातों पर वार कर रहा है। वह कह रहा है, ''नहीं, तुम किसी चुने हुओं के लिए नहीं बल्कि सभी मनुष्यों के लिए प्रार्थना करो, कि हमारी प्रार्थनाओं में विविधता हो।'' तुम सब मनुष्यों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करो : जैसे कि यहूदी और अन्यजातियों के लिए; अमीरों और गरीबों के लिए; अलग जातियों के लिए, अलग पृष्ठभूमियों के लिए, अन्य जनसांख्यिकीय के लिए। अपनी प्रार्थनाओं में विविधता होने दो। अपनी प्रार्थनाओं को केवल ण्क वर्ग तक सीमित मत रखो। अपनी प्रार्थनाओं को किसी राष्ट्र तक सीमित मत रखो।

अब, मैं चाहता हूँ कि, इस बिंदु पर अपनी प्रार्थना के जीवन के बारे में सोचें। ज़रा एक पल के लिए रुक जाएँ। क्या आपकी प्रार्थनाओं में विविधता है? क्या आप अपनी प्रार्थनाओं में सब प्रकार के लोगों को शामिल करते हैं, या कि आप केवल अपने जैसों के लिए प्रार्थना करते हैं? मैं आपमें से हरेक को व्यक्तिगत रुप से, अपनी प्रार्थनाओं में विविधता लाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। मैं हम सबको एक साथ इस बात के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। यही कारण है कि, आराधना सभा के अंत में बिचवई की प्रार्थना का जब समय होता है, हम प्रार्थना करते हैं। यह अलग–अलग तरह के लोगों की एक लंबी सूची के समान है, क्योंकि हमें ऐसा करने की आज्ञा दी गई है। यहाँ पर अधिकतर दृश्य सार्वजनिक प्रार्थना का है। हमें प्रार्थना करनी है। परमेश्वर हमें सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करने का आदेश देता है। इसलिए मुसलमान, हिंदु और बौद्ध, सभी के लिए प्रार्थना करो। इस राष्ट्र के, इस राष्ट्र के, इस राष्ट्र के लिए प्रार्थना करो। लोगों के इस समूह, इस समूह और इस समूह के लिए प्रार्थना करो। हो

सकता है कि अपने शहर और संसार के लोगों की हमारी प्रार्थना में विविधता हो। प्रार्थना करते समय हमें दुनिया भर में सभी प्रकार के लोगों को गले लगाना चाहिए।

ऐसा कहा जाता है कि क्रिश्चियन मिशनरी अलायंस के संस्थापक, ए.बी. सिम्पसन सुबह–सुबह उठते, घुटनों पर जाते, एक ग्लोब पर हाथ रखते हुए आँसूओं के साथ विश्व के लिए प्रार्थना करते थे। ओह, पूरे सप्ताह के दौरान, हमारे जीवनों की भी यही तस्वीर हो, और फिर हमारे जीवन एक साथ मिल कर एक कलीसिया की तरह साथ आएँ, और अपनी प्रार्थना में हम दुनिया को पकड़ें और गले लगाएँ।

हमें सभी मनुष्यों के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा मिली है, इसमें ऊँची पदवी पद बैठे अधिकारी लोग भी हैं। अब, यह बात और भी हैरान करनेवाली इसलिए है क्योंकि पौलुस यह पत्री उस ज़माने में लिख रहा है जब रोमी राजा नीरो का राज्य था, जो मसीहियों पर सताव भेज रहा था। वास्तव में, उस समय, केवल कुछ ही मसीही ऊँचीं पदवियों पर थे। अधिकांश हिस्सों के शासक या प्रशासक मसीही नहीं थे। इसलिए, पौलुस उन अगुवों के लिए प्रार्थना करने की बात जानबूझ के कहता है। अब, यह बात स्पष्ट है कि हम में से अधिकांश लोग ठीक वैसी स्थिति में नहीं हैं। हम आज किसी राजा के शासन के अधीन नहीं हैं जो हमारी मृत्यु चाहता हो, या कि कलीसिया और मसीहियों को मरवाना चाहता हो। लेकिन तब भी हमारे लिए भी यहाँ एक प्रोत्साहन है। सचमुच, आज्ञा पूरी तरह स्पष्ट है कि एक कलीसिया के रुप में, हमें ऊँचे पद के अधिकारियों के लिए प्रार्थना करनी है। क्या आप अपने राष्ट्र के नेताओं के लिए प्रार्थना कर रहे हैं? मैं जानता हूँ कि हम में से अधिकतर लोगों में कुछ विशेष राजनैतिक नेताओं की नीतियाँ या पदों को लेकर असहमति होगी। लेकिन क्या हो कि हम उन्हीं नेताओं के लिए बिचवाई की प्रार्थना में समय बिताएँ? हमें इस रीति से उन नेताओं के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा मिली है।

अब, हम प्रार्थना किस विषय पर करें? पौलुस ऐसा नहीं कहता, ''प्रार्थना करो कि परमेश्वर नीरो सब कुछ भूल जाए।'' ऐसी प्रार्थना न करें। आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आप प्रार्थना करते हैं, ''राजाओं और सब ऊँचे पद वालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ।'' इसलिए सताव के बीच शांति के लिए प्रार्थन करो। इन राजाओं और ऊँचे पदों पर आसीन लोगों के लिए प्रार्थना करो, और मेरे विचार से पौलुस की कही इन बातों के बहुत से आयाम हैं। एक तरफ, पौलुस कह रहा है ''कि इन ऊँचें पदों पर आसीन लोगों के लिए प्रार्थना करों कि वे इस प्रकार राज्य करें जो शांति ले कर आए। ये ऊँचे अधिकारी शांति की ऐसी छत्र–छाया प्रदान करें कि जिसके तहत कलीसिया पनप सके और सुसमाचार को मुक्त रुप से जी सके, लेकिन अपने अधिकारियों के विरुद्ध हो कर नहीं, वरन् अधिकार के तहत रहते हुए।

यही तस्वीर पहली सदी की भी है। हम पैक्स रोमाना, या कि ''रोमी शांति'' को देखते हैं, और रोमी शांति के द्वारा सड़कों का निर्माण हुआ, और व्यापार–मार्ग बनाए गए, जिसके कारण सुसमाचार को दूसरे क्षेत्रों में तेज़ गति से फैलने में सहायता मिली। लेकिन, एक ऐसी तस्वीर भी है, स्पष्ट है कि यह हमारे आज के और स्वतंत्रता के संदर्भ में है, कि हम में से अधिकतर लोगों के पास एक बेहतर भविष्य है, कि हम सुसमचार के प्रभावों को अपने आसपास के लोगों के बीच मुक्त रुप से जी सकते हैं। जो कि एक बहुत अच्छी बात है।

इसलिए, हमें प्रार्थना करने की ज़रुरत है, विशेष रुप से अपने भाइयों और बहनों के लिए जो ऐसी स्थिति में हैं जहाँ उन्हें यह स्वतंत्रता नहीं है, और उस प्रकार के अगुवे नहीं हैं। उत्तरी कोरियों के नेताओं के लिए प्रार्थना करना। मिस्र के नेताओं के लिए प्रार्थना करना जहाँ शांति बुरी तरह प्रभावित है और स्वतंत्रता अभी आकार ले रही है। कलीसिया के लिए ऐसा करना कैसा रहेगा? हम उन नेताओं के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि कलीसिया शांतिपूर्वक, सुखी, धर्मी, और गरिमापूर्ण जीवन जी सके। इसलिए, वहाँ ऐसी तस्वीर है : सताव के बीच शांति के लिए प्रार्थना करना।

ठीक उसी समय, यह जानते हुए कि कुछ अगुवे ऐसे हैं जो कलीसिया पर सताव भेजना जारी रखेंगे। ज़रा सोचें, उन अगुवों के लिए और उन सताव भेजनेवालों के लिए प्रार्थना करना, तस्वीर यह है कि उनके लिए प्रार्थना करने में, मसीही उस सताव के प्रति अपनी प्रतिक्रिया करेंगे जो शांतिपूर्ण, शांत, धर्मी, और गरिमापूर्ण है। यह जॉन क्राइसोस्टॉम था, आरंभिक कलीसिया के संस्थापकों में से एक, जिसने कहा था कि किसी के लिए प्रार्थना करना, आपके लिए उससे नफरत करना कठिन बना देता है। उस व्यक्ति का तिरस्कार करना, और उस व्यक्ति के विरुद्ध नकारात्मक रुप से प्रतिक्रिया करना कठिन बना देता है। जब आप किसी व्यक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो आप उससे प्रेम करना शुरु कर देते हैं।

इसलिए, सताव के बीच शांति के लिए प्रार्थना करें। सताव करनेवालों के लिए उद्धार की प्रार्थना करें। ऊँचे पद पर आसीन अगुवों के लिए प्रार्थना करें। इस प्रकार की प्रार्थना हमारी कलीसिया में प्रत्यक्ष हो, और यह हमारे जीवनों में भी प्रत्यक्ष हो।

संसार में सुसमाचार की प्रगति कलीसिया में परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं पर निर्भर करती है।

क्यों? हम बस कुछ पलों में इसके थियोलॉजिक पहलू पर देखेंगे। 1 तीमुथियुस 2 के आरंभ से ही जो तस्वीर पौलुस बना रहा है, वह पूरी तरह साफ है : संसार में सुसमाचार की प्रगति कलीसिया में परमेश्वर के लोगों की प्रार्थनाओं पर निर्भर करती है। मैं चाहता हूँ कि आप इस बात पर ध्यान दें। ये वचन, जिन्हें हम यहाँ पढ़ रहे हैं, वह पूरे नए नियम में सुसमाचार के प्रचार और मिशन पर दिए महान पद्यांशों में से एक है। हम बस उस तस्वीर के बारे में बातचीत करने ही वाले हैं। परमेश्वर की इच्छा है कि दुनिया भर के सभी लोग उसके उद्धार के बारे में जानें। इसी कारण, परमेश्वर अपने लोगों से

कहता है, कि ''तुम इसके लिए प्रार्थना करो और जान लो कि तुम्हारी प्रार्थनाओं का पूरे संसार में सुसमाचार की प्रगति पर सीधा प्रभाव पड़ता है। ओह, अपने आसपास मौजूद खोये हुए लोगों के लिए इसी रीति से प्रार्थना करो।''

वृद्ध अंग्रेज़ पास्टर, रिचर्ड बैक्सटर इसे कुछ इस तरह से कहते हैं। प्रार्थना के विषय पर बातचीत करते हुए उन्होंने कहा था कि,

''अपने मन अपने अधर्मी भाइयों के लिए तड़पने दो। आह! उनके और नरक के बीच केवल एक कदम की दूरी है। बहुत से रोग उनकी प्रतिक्षा में हैं, उन्हें जकड़ने को तैयार हैं, यदि वे नया जन्म पाए बिना ही मर गए, वे सदा के लिए खो जाएँगे। क्या तुम्हारे दिल पत्थर के हैं कि उनकी इस दशा को देख कर भी तुम्हें तरस नहीं आता? अपने बचाए जाने के अलावा तुम्हें क्या उन श्रापितों की कोई चिंता नहीं? यदि ऐसा है, तो तुम्हे खुद पर तरस आना चाहिए, क्योंकि ऐसी आत्मा अनुग्रह से मेल नहीं खाती है। क्या तुम उनके आसपास रहते हो? या कि उनसे राह चलते मिलते हो, या उनके साथ उठते–बैठते हो, और तब भी उनसे उद्धार के बारे में कुछ नहीं कहते? यदि उनके घरों में आग लग जाए, तो तुम दौड़ कर उनकी मदद करोगे; तो क्या जबकि उनकी आत्मा नरक की आग में गिरने को है, क्या तुम उनकी मदद न करोगे?''

उन्हें देखें। उन लोगों को देखें। अपने साथ काम करनेवालों के चेहरों को देखें, और उनके भी जो आपकी बगल में बैठे हैं। इस सप्ताह, हर उस व्यक्ति को देखें जिससे आप किसी प्रकार का कोई व्यवहार करते हैं। ये आत्माएँ हैं जिनकी नियति या तो अनन्त पीड़ा है या फिर अनन्त सुख; मसीह से रहित नरक या मसीह के साथ स्वर्ग। उनके लिए प्रार्थना करें। उनके उद्धार के लिए तड़पें। उनके लिए परमेश्वर को गुहार लगाएँ।

थियोलॉजिकल प्रेरणा .....

हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों का उद्धार चाहता है।

क्यों? इन सबके पीछे कौन सी थियोलॉजिकल प्रेरणा है? हम क्यों इस तरह प्रार्थना करते हैं? तीन कारण : पहला, हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों का उद्धार चाहता है। हम इस तरह प्रार्थना करते हैं क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों का उद्धार चाहता है। यही कुंजी है। संसार के लिए हमारी प्रार्थना, संसार के लिए परमेश्वर की तीव्र इच्छा से प्रेरित है। तीसरे पद में, यह कहता है, ''यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो.....।'' जब आप संसार के सब प्रकार के लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं, आपका मन परमेश्वर के मन की तरह महसूस करने लगता है। परमेश्वर सभी लोगों का उद्धार चाहता है। परमेश्वर

चाहता है कि यहूदी और गैर–यहूदी बचाए जाएँ। परमेश्वर चाहता है कि गरीब और अमीर बचाए जाएँ। परमेश्वर चाहता है कि वे, और आरुंदो, और बलोखे, और दल के बाकी 11000 लोग उसके उद्धार को जानें। जब आप सब प्रकार के लोगों के लिए इस तरह प्रार्थना करना सीख जाते हैं, आप परमेश्वर के मन के प्रकाश में प्रार्थना करते हैं, और यह बहुत अच्छा है। परमेश्वर, उद्धारकर्ता, जो सब लोगों का उद्धार चाहता है, उसे यह भाता है।

इसलिए, उस बात के प्रति सावधान रहें जो यह पद्यांश नहीं कहता है। इस पद्यांश का अर्थ यह नहीं है कि सभी लोग उद्धार पाएंगे। बाइबल जब कहती है, कि परमेश्वर चाहता है कि ''सब मनुष्यों का उद्धार हो'', तब कुछ लोग इन पदों को अलग से लेते हैं उसे सर्वहितवाद में बदल देते हैं, जो कहता है कि, ''अच्छा, क्योंकि परमेश्वर सब मनुष्यों का उद्धार चाहता है, और वह सदा अपनी इच्छा पूरी करता है, इसलिए वह सब लोगों को बचा लेगा।'' लेकिन ऐसी कोई भी बात न तो यह पद्यांश सिखाता है और न ही बाइबल ऐसी कोई शिक्षा देती है।

वचन इस बात को लेकर पूरी तरह स्पष्ट है कि हम मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा बचाए जाते हैं। उद्धार केवल उन्हीं को मिलता है जो अपने बचाए जाने के लिए अनुग्रह द्वारा मसीह में विश्वास करते हैं। इसलिए, ये पद ऐसा कुछ नहीं कहते हैं कि अंत में आखिरकार सभी लोग बचा लिए जाएंगे।

लेकिन साथ ही, ये पद ऐसा भी कहते कि परमेश्वर की इच्छा नाकाम हो चुकी है। कुछ लोग कहते हैं, कि ''देखिये, अगर परमेश्वर चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, लेकिन सभी लोग तो बचाए नहीं गए हैं, इससे साफ पता चलता है कि संसार में होनेवाली हर बात पर परमेश्वर का नियंत्रण नहीं है।'' यह बात भी सच नहीं है। एक बार फिर, आरंभ से लेकर अंत तक वचन पूरी तरह सच है कि परमेश्वर का सब बातों पर अधिकार है, और उसकी इच्छा कभी नहीं टल सकती। लेकिन हमारे पास इस विषय की गहराई में जाने का समय नहीं है, बस एक छोटा सी समीक्षा। याद है, हमने इस विषय पर बातचीत की थी कि जब बाइबल परमेश्वर की अभिलाषाओं और इच्छा के बारे में कहती है, उस समय वह परमेश्वर की इच्छा की विभिन्न रीतियों के बारे में कहती है। कई बिंदुओं पर बाइबल परमेश्वर की घोषित इच्छा के बारे में कहती है, कि वह ऐसा उद्घोषित करता है, या वह अपने वचन में ऐसा कहता है। लेकिन कई बिंदुओं पर बाइबल, उसकी आदेशित इच्छा के बारे में कहती है। यह बुनियादी तौर पर वह बातें हैं जो यहाँ इस संसार में घटती हैं। वे हमेशा एक सी नहीं होती हैं।

चलिए मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। चलिए मान लेते हैं कि कल मुझे किसी से झूठ बोलना है। मैं ऐसा करने की कोई योजना नहीं बना रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि मैं यह करुँ, लेकिन चलिए एक पल के लिए मान लेते हैं कि, कल्पना करते हैं, कि मैं कल किसी से झूठ बोलता हूँ। मेरा किसी से झूठ

बोलना परमेश्वर की इच्छा के तहत है या इच्छा से बाहर है? खैर, यह निर्भर करता है। जब बात उसकी घोषित इच्छा की हो, तो उसने अपने वचन में क्या कहा है, उसने साफ–साफ कहा है कि ''झूठ मत बोलो।'' मैं उसकी इच्छा से बाहर हूँ। मैं उसकी इच्छा की अवज्ञा कर रहा हूँ। लेकिन, साथ ही अगर मैं कल किसी से झूठ बोलता हूँ तो स्वर्ग में परमेश्वर ऐसा नहीं कहेगा कि ''डेविड, मुझे नहीं पता था कि तुम ऐसा कुछ करोगे। '' तो फिर किसे पता था? उसे पता था! उसे हर बात का पता है; क्योंकि एक तरह से वही तो सब बातों की आज्ञा देता है। परमेश्वर यहाँ तक कि सबसे बुरी बातों पर भी प्रबल है। परमेश्वर ने कहा था, कि ''हत्या मत करो।'' वह उसकी घोषित इच्छा है। लेकिन क्रूस पर अपने बेटे की मृत्यु पर भी वह प्रबल था। वह जानता था कि उसके बेटे की हत्या की जाएगी, और उसने वह होने दिया।

अब, जब बात हमारे कामों और उसकी इच्छा की होती है तो यहाँ पर एक गूढ़ रहस्य दिखता है, लेकिन इसे जान लें कि : परमेश्वर की आदेशित इच्छा को टाला नहीं जा सकता है। इस तरह से देखें तो इन पदों का सीधा सा अर्थ यह है कि परमेश्वर सब मनुष्यों से प्रेम रखता है। यही है मुद्दे की बात। परमेश्वर सब मनुष्यों का उद्धार चाहता है। 2 पतरस 3:9, कि परमेश्वर *''.....नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।''* क्योंकि परमेश्वर सब मनुष्यों का उद्धार चाहता है, हम सबे उद्धार के लिए प्रार्थना करते हैं। यह जान लें कि : जब आप अपने खोये दोस्तों और पड़ोसियों के लिए प्रार्थना करते हैं, जब आप अपने खोये हुए बैरियों के लिए प्रार्थना करते हैं, और जब आप पूर्वी एशिया में वे (wey) के लिए, और मध्य एशिया में बलोखे के लिए, और उत्तर अफ्रिका में आरुंदो के लिए प्रार्थना करते हैं, आप उस परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो उन सबसे प्रेम रखता है और उनका उद्धार चाहता है। उनके उद्धार के लिए परमेश्वर की खुशामद नहीं कर रहे हैं। वह उनसे प्रेम रखता है और उनका उद्धार चाहता है। यही कारण है कि हम इस तरह प्रार्थना करते हैं। इसीलिए इस तरक से प्रार्थना करना अच्छा है, और हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को भाता है।

हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि परमेश्वर सभी लोगों के आदर के योग्य है।

दूसरा कारण, हम प्रार्थना सिर्फ इसलिए नहीं करते कि परमेश्वर सब मनुष्यों का उद्धार चाहता है, बल्कि इसलिए भी कि परमेश्वर सभी लोगों के आदर के योग्य है। पाँचवा पद कहता है, पौलुस कहता है, ''परमेश्वर एक ही है....।'' ओह, यह कितना सरल कथन लगता है, लेकिन यह है बहुत ही महत्वपूर्ण कथन। ऐसा नहीं है कि यहाँ इन लोगों के लिए यह परमेश्वर है, वहाँ उन लोगों के लिए कोई दूसरा परमेश्वर है। अलग–अलग तरह के लोगों के लिए, अलग–अलग परमेश्वर नहीं हैं। नहीं, सभी मनुष्यों के लिए केवल एक ही परमेश्वर है। यशायाह 45:21–22 कहता है, ''..... मुझे छोड़ कोई और दूसरा परमेश्वर नहीं है, धर्मी और उद्धारकर्ता ईश्वर मुझे छोड़ और कोई नहीं है। हे पृथ्वी के दूर दूर के देश

के रहने वालो, तुम मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ! क्योंकि मैं ही ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं है।'' परमेश्वर केवल एक ही है और वही उद्धारकर्ता है; परमेश्वर एक ही है और वह सब लोगो की स्तुति के योग्य है।

इसे देखे : आराधना संसार भर की प्रार्थना की ऊर्जा है। इसलिए, हम यह कहने के लिए एकत्रित होते हैं : हमारा परमेश्वर महान है, वह अधिक बलवान है, वह ऊँचा और सबसे ऊँचा और महान है। इसलिए हम पूरे जोश के साथ यह गाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि वह सबसे महान है, वह अधिक बलवान है, वह ऊँचा और सबसे ऊँचा और महान है, और जब हम ऐसा गाते हैं, तब हम इस पर विश्वास करते हैं, और हम इस तरह प्रार्थना करते हैं। परमेश्वर सभी राष्ट्रों और शहर के सभी मनुष्यों को दिखा कि तू अधिक महान, बलशाली, और बाकी सभी से ऊँचा है। आराधना इस प्रकार की प्रार्थना को बल देती है। प्रभु की प्रार्थना का भी यही भाव है। ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में हैय तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आएय तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो। हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचाय क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।''

आराधना जगत के प्रार्थना की ऊर्जा है, और फिर यह समझ लें कि : आराधना जगत की प्रार्थना का लक्ष्य है। हम इसी ओर प्रार्थना में बढ़ रहे हैं। हम दिन–रात, सप्ताह दर सप्ताह प्रार्थना कर रहे हैं। हम संसार को थामते हैं, प्रार्थना में उसे गले लगाते हैं, और उस दिन की आशा करते हैं जब सब जाति के लोग उसके सिंहासन के आगे एकत्रित होंगे और उसे वह आदर देंगे जिसके वह योग्य है। यही बात हम अपनी प्रार्थना में माँगते हैं। हम विश्वव्यापी आराधना के पीछे लगे हैं, और ऐसा होनेवाला है, और हम उसके अंतिम छोर तक जाएंगे।

चलिए आगे बढ़ें और इसमें लग जाएं, बस थोड़ा सा। जब हम इस रीति से प्रार्थना करते हैं, हम प्रत्याशा के साथ प्रार्थना करते हैं। इसलिए, हम सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं। हम मध्य एशिया में बलोखे, पूर्वी एशिया में वे, उत्तर अफ्रिका में आरुंदो के लिए प्रार्थना करते हैं; लोगों के ये दल जिन्हें अपनी प्रार्थना में अपनाया है, वे सुसमाचार से अछूते लोग हैं। परमेश्वर के अनुग्रह और परमेश्वर के सामर्थ्य द्वारा हमें इसे बदलना है, हम इस बदलाव का हिस्सा बनना चाहते हैं क्योंकि जब हम लोगों के इन समूहों के लिए प्रार्थना करते हैं, तब हम उस दिन की आशा करते हैं जब बलोखे, वे और आरुंदो के लोग परमेश्वर के सिंहासन के आसपास खड़े होकर परमेश्वर की स्तुति गाएंगे। यही वह बात है जो हमसे प्रार्थना करवाती है क्योंकि हमारा विश्वास है कि परमेश्वर सब मनुष्यों के आदर का पात्र होने के योग्य है। आप यहाँ थियोलोजिकल प्रेरणा देखते हैं? लेकिन बात यहीं पर खत्म नहीं होती।

हम प्रार्थना करते हैं क्योंकि मसीह सब मनुष्यों के छुटकारे के लिए मरा था।

तीसरा कारण, क्यों हम सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं क्योंकि मसीह सब मनुष्यों के छुटकारे के लिए मरा था। *''क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया।''* ''छुटकारे का दाम'' या कि *छुड़ौती* बहुत ही बड़ा शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ भी किसी बंधक या कैदी की रिहाई या छुड़ाने के लिए चुकाई गई कीमत है। एक समीक्षक ने कहा था कि इस पुस्तक का 5वाँ और छठा पद ''बाइबल का संक्षिप्त रुप और सुसमाचार का सार है।''

तो, यह रही तस्वीर : परमेश्वर केवल एक ही है। वह सभी रीतियों में पूरी तरह पवित्र है, वह अपने सारे न्याय में न्यायसंगत है। यह रहे हम, पुरुष और महिलाएँ, हर रीति से पापी और न्याय के योग्य। हम एक गहरी खाई द्वारा परमेश्वर से अलग हैं। आप और हम किसी भी रीति से अपने प्रयासों के द्वारा परमेश्वर से अपना मेलमिलाप नहीं करा सकते हैं। इस अन्तर को पाटने के लिए, बिचवई होने के लिए हमें किसी की ज़रुरत है, और यहाँ यीशु आता है। मसीह अपनी भूमिका में अनोखा है। वह एक बिचवई है। जो बात उसे बिचवई बनाती है वह है दोनो पक्षों को समझता है। वह पूरी रीति से परमेश्वर को समझता है। वह संपूर्ण रीति से परमेश्वर है। वह दिव्य है। वह इसलिए पूरी रीति से परमेश्वर को समझता है और उससे संबंधित है, लेकिन साथ ही वह मनुष्य को भी पूरी रीति से समझता है और उससे संबंधित है। वह मनुष्य यीशु मसीह है, हर रीति से हमारी तरह मनुष्य, किंतु पापरहित। वह अद्भुत रीति से अपने दोनो को साथ में ला सकता है। यही काम बिचवई का होता है।

पिछली रात, मैं अपने दोनो बेटों के साथ बाहर था। अंधेरा हो रहा था, और हम कीड़ें खोज रहे थे। समस्या यह थी कि टॉर्च हमारे पास एक थी, लेकिन बेटे दो। यही समस्या भी यही थी, कि दोनो ही टॉर्च लेना चाहते थे। वे टॉर्च के लिए एक दूसरे से बहस कर रहे थे। तभी मैं पहुँचता हूँ, एक बिचवई की तरह जो दोनो पक्षों की बात को सुन सकता है, दोनो तक एक दूसरे की बात पहुँचाने के लिए, इस तरह की तस्वीर लाने के लिए, और एक समझौते पर पहुँचने के लिए।

यही है यीशु। यीशु मध्य में खड़ा है। पूरी तरह परमेश्वर; पूरी तरह मनुष्य। अपने आस्तित्व में अनोखा, और अपनी भूमिका में अनोखा। इसलिए, यहाँ आते रहें, एक बिचवई के बारे में सोचते हुए। उसने स्वयं को एक छुटकारे की रकम की तरह दे दिया। उसने कीमत चुका दी। उसकी चुकाई क्या थी? देखिए, पाप की कीमत मृत्यु है। छुटकारे की कीमत थी मृत्यु। यह वह कीमत थी जो मनुष्य को स्वयं चुकानी थी। हम ही मृत्यु के योग्य थे। हम पापी हैं। अकेले हम ही मृत्यु के योग्य थे, लेकिन सच्चाई यह है कि हम इस कीमत को, पवित्र परमेश्वर के प्रचंड क्रोध को अपने ऊपर नहीं ले सकते। हमारे लिए केवल परमेश्वर ही ऐसा कर सकता था। मनुष्य अकेले पर इस कीमत का भार था। परमेश्वर अकेले इसे चुका

सकता था। केवल परमेश्वर ही पाप के कारण उत्पन्न हुए उस असीम प्रचंड क्रोध को सह सकता था। तो, परमेश्वर ने ऐसा कैसे किया? उसने यह मसीह में किया। मसीह पूरी तरह परमेश्वर और पूरी तरह मनुष्य था और उसने परमेश्वर की तरह मनुष्य की कीमत को चुकाया। यह भला था। यही बाइबल का सार है।

मेरी सासु माँ, एक पापी, उन्होंने अपनी साँस ली, और क्योंकि उसने मसीह को अपना बिचवई होने के लिए उस पर विश्वास किया था, उनके पापों की अनन्त कीमत उसके उद्धारकर्ता ने चुका दी। कीमत चुकाई जा चुकी है, और पिछले रविवार, बचाव का काम आखिरकार पूरा हो गया।

यीशु अपने आस्तित्व में और अपनी निभाई भूमिका में अनोखा था। मुझे यह बात यहाँ पर भी डालनी पड़ी। वह अपनी भूमिका में अनोखा है, क्योंकि क्रूस पर किए अपने काम के द्वारा, वह केवल अतीत का बिचवई नहीं है; वह वर्तमान में भी हमारा बिचवई है, और पिता की दाहिनी ओर बैठा है। वह हमारे बिचवई की तरह रहता है। प्रार्थना करते समय इस बात पर सोचें : यीशु जीवित है, इस पल, यहाँ तक कि हमारी आराधना में भी, एक बिचवई की तरह वह जीवित है। वह पिता की दाहिनी ओर है। वह हमारी बिचवाई कर रहा है। यही वह माध्यम है जिसके द्वारा आराधना में हम परमेश्वर की उपस्थिति में जाते हैं; हम प्रार्थना में परमेश्वर तक पहुँचते हैं। वह हमारे बिचवई की तरह जी रहा है, हमारे बिचवई की तरह राज्य कर रहा है, निरन्तर और सतत् रुप से, पल–पल। वह हमारा बिचवई है, और वह हमें मिशन की ओर ले जा रहा है।

स्पष्ट निहितार्थ.....

जैसे हम सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं, वैसे ही हम सब मनुष्यों में सुसमाचार का प्रचार करते हैं। यह स्पष्ट निहितार्थ की ओर ले जाता है। 7वें पद में पौलुस बस इस पर छलांग लगा देता है। वह कहता है *''मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।''* यह रही मुद्दे की बात। जैसे हम सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं, वैसे ही हम सब मनुष्यों में सुसमाचार का प्रचार करते हैं। *'मैं जैसे प्रार्थना करता हूँ'* पौलुस कहता है कि *''वैसे ही मैं प्रार्थना करता हूँ।'* पौलुस यहाँ पर विशेष रुप से अपने जीवन पर परमेश्वर की बुलाहट के बारे में में बातचीत कर रहा है, लेकिन सच्चाई यह है कि वह जो बात यहाँ पर कह रहा है वह संसार भर में मसीह के सभी अनुयायियों के जीवन पर लागू होती है।

यह रही मुद्दे की बातः हम जितना अधिक सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं , उतना ही अधिक हम यह समझते जाते हैं कि परमेश्वर सब मनुष्यों का उद्धार चाहता है, और परमेश्वर सब मनुष्यों के आदर के योग्य है। हमें यह बात जितनी अधिक समझ में आती है कि मसीह लोगों को बचाने के लिए मरा था, उतना ही अधिक हम उस प्रमुख उद्देश्य के लिए जीने को विवश होते हैं। हमें सुसमाचार का

संदेश देना है, और सभी लोगों के बीच सुसमाचार का प्रचार करना है। हम हर किसी के आगे मसीह के क्रूस की घोषणा करते हैं। अनुवाद के कुछ संस्करण कहते हैं, ''मैं इसी उद्देश्य से संदेशवाहक ..... ठहराया गया।'' मैंने इस शब्द को इसलिए प्रयोग किया है क्योंकि यह प्राचीन समय का एक बहुत ही अच्छा, प्राचीन शब्द है जो बड़ी घोषणा करनेवाले किसी व्यक्ति का वर्णन करता है। चाहे वह खेलकूद की प्रतियोगिता की घोषणा हो, या चाहे युद्ध में हुई जीत की घोषणा करनी हो, एक संदेशवाहक बाहर निकल कर, भीड़ के आगे समाचार देता था।

भाइयों और बहनों, आप इस सप्ताह के संदेशवाहक हैं। आप दुनिया की सबसे अच्छी खबर के संदेशवाहक हैं। इसे चिल्ला कर कहें, और लोगों को बताएँ कि उन्हें मृत्यु से डरने की कोई ज़रुरत नहीं है, क्योंकि मसीह मृत्यु पर जय पा चुका है और वे उसके साथ सदा के लिए जी सकते हैं। इस सप्ताह अलाबामा और ऑबर्न की फुटबॉल टीमों के बारे में बातचीत करने से बेहतर है इसे करना। यह एक खुशखबरी है! हम यही संदेश तो देते हैं; हम इसीकी घोषणा करते हैं, और जैसे हम मसीह के क्रूस की घोषणा करते हैं, वैसे ही हम मसीह की आज्ञाएँ सिखाते हैं। हम यही करते हैं, कलीसिया। हम सब लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, और फिर धरती के छोर तक हम सब लोगों में प्रचार करते हैं, और हम सुसमाचार की शिक्षा देते हैं।

आनेवाला निष्कर्ष.....

मेरे साथ प्रकाशितवाक्य 5:8 निकालें। आपको यह देखना ही होगा। यही वह जगह है जहाँ सारी बातें जाती हैं। मैं आपको स्वर्ग की एक झलक देना चाहता हूँ। पिछले सप्ताह हमने स्वर्ग पर बहुत सी बातचीत की थी। पाँच या तीन साल के बच्चे से अंतिम संस्कार गृहों और कब्रिस्तानों के बारे में बातचीत करना, और बातचीत के दौरान आए प्रश्नों का जवाब देना बहुत ही चुनौती भरा काम होता है। आपमें से बहुत से लोग इस तरह के प्रश्नों से परिचित होंगे, और हौसला रखिए, कि ऐसे सवालों को जवाब देते समय आपके पास्टर के भी पसीने छूट जाते हैं, क्योंकि कई बार मुझे भी पता नहीं चलता कि उनमें से कुछ सवालों के जवाब में मैं क्या बोलूँ, लेकिन वे अच्छे सवाल होते हैं।

मैं प्रकाशितवाक्य 5:8 में से स्वर्ग की एक झलक आपको दिखाना चाहता हूँ। ज़रा इसे सुनिएगा। हम मसीह के स्क्रोल लेने के मध्य में आ चुके हैं जिसमें परमेश्वर के राज्य । यह कहता है '' *और जब उस ने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के साम्हने गिर पड़े*' यह मसीह है, प्रकाशितवाक्य 5 में सिंह के जैसा मेम्ना। *''...और हर एक के हाथ में''* (हर प्राचीन के हाथ में) *''..... वीणा और (इसे सुनिए) धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं।''*

अब यहाँ पर लोगों के बीच में एक बहस है कि ये कौन से पवित्र लोग थे जिनकी प्रार्थनाओं की बात यहाँ पर हो रही है, लेकिन अधिकांश लोग यह मानते हैं कि शायद स्वर्ग के पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ

और धरती पर पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ, दोनो की ही प्रार्थनाओं की बात यहाँ पर हो रही है। यदि अब अगले अध्याय में जाएँ, तो आप सत्य व धर्म के लिए मरनेवालों को स्वर्ग में परमेश्वर के आगे प्रार्थना करते हुए पाएंगे। ये वे लोग थे जिन्होंने मसीह में अपने विश्वास के चलते अपनी जान गवाई थीं। साथ ही इस तस्वीर में धरती के उन पवित्र लोगों की भी प्रार्थनाएँ शामिल हैं जो परमेश्वर के राज्य की चाह करते हैं और उसके आने की प्रार्थना करते हैं।

इसलिए, यहाँ पर हम दोनो को मान लेते हैं। इसलिए, हम सब लोगों के उद्धार और सब लोगों पर परमेश्वर की महिमा के लिए और परमेश्वर के राज्य के आने की प्रार्थना करते हैं। हमारी प्रार्थना को ऊँचा उठाया गया है '' और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू ने वध हो कर अपने लहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया, और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।''

हम हियाव के साथ प्रार्थना करते हैं और निर्भीकता के साथ प्रचार करते हैं क्योंकि.....

यही है सबसे प्रमुख उद्देश्य है। यही कारण है कि हम जो करते हैं, वह हम क्यों करते हैं। हम पूरे हियाव के साथ प्रार्थना करते हैं कि सब लोग मसीह को उद्धारकर्ता जानें। हम हियाव के साथ प्रार्थना करते हैं और निर्भीकता के साथ प्रचार करते हैं। इस सप्ताह, पूरी निर्भीकता के साथ प्रचार करें। अपने जीवनों में, इस साल, अलग–अलग तरह की जगह में अल्प अवधि की मिशन यात्रा पर जाएँ। हम में से कुछ लोग सत्र के मध्य में जा रहे हैं, तो कुछ लोग विदेश जा रहे हैं। इस शहर की हर तरह की जगहों पर जाएँ और दूसरे शहरों में जाएँ, निर्भीकता से प्रचार करते हुए, क्योंकि हम जानते हैं कि एक दिन हमारा मिशन रंग लाएगा। हर तरह के लोग, हर जनजाति और भाषा के लोग, और लोग व राष्ट्रों कीमत चुका दी जाएगी। इस बात की गारंटी है। उनके छुटकारे की कीमत चुका दी जाएगी। हमारा मिशन जीत जाएगा, और हमारे बिचवई की प्रशंसा होगी। यह एक अनन्त गारंटी है। यही बात सदा के लिए मायने रखती है। इसलिए प्रार्थना करें, प्रचार करें, जीवन जीएँ, और जीवनों को बचाएँ, क्योंकि केवल यही बात मायने रखती है।